REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

''पर्यावरण शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन''

विनय प्रताप सिंह
सहायक प्राध्यापक, श्याम शिक्षा महाविद्यालय सक्ती
जिला – जांजगीर–चांपा (छ.ग.)

सारांश :–

पर्यावरण एक बहुआयामी संकल्पना है जिसके जैविक तथा अजैविक घटकों के मध्य निरंतर अन्तः क्रिया चलती रहती हैं। पर्यावरण के विभिन्न घटकों को प्रभावित करने वाले कारकों में मुष्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। यही कारण है कि पर्यावरण के क्षय या प्रबंधन में मनुष्य की भूमिका को अब निर्णायक माना जा रहा है। आज से लगभग 50 हजार वर्ष पूर्व मनुष्य के द्वारा आग के उपयोग से पृथ्वी के पर्यावरण में परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। लगभग 8–10 हजार वर्ष पूर्व मनुष्य ने कृषि कार्य प्रारम्भ किया। जिससे पर्यावरण को बदलने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई तत्पश्चात् मनुष्य द्वारा पशुपालन, कृषि और औद्योगिक विकास से प्राकृतिक पर्यावरण काफी हद तक प्रभावित हुआ।

प्रायः सभी देशों में कृषि, उद्योग, परिवहन, ऊर्जा उत्पादन, अभियांत्रिकी, पशुपालन, सुरक्षा तथा अन्य विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन से समग्र पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। प्राकृतिक पदार्थो के उत्खनन, परिष्करण और उपभोग से उत्पन्न पर्यावरणीय प्रभावों को और अधिक लम्बे समय त अनदेखा नहीं किया जा सकता।

विगत कुछ सदियों में मनुष्य की प्रकृतिक के साथ अंतःक्रिया में कई गुना वृद्धि हुई जिसका प्रत्यक्ष कारण मनुष्य के वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक ज्ञान में वृद्धि होना है। उन्नीसवीं सदी में औद्योगिक क्रान्ति ने जो जोर पकड़ा वह अब सार्वभौतिक हो गयी हैं।

इसका प्रभाव न केवल प्राकृतिक संसाधन के दोहन तक सीमित रहा बल्कि इससे प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण को भी बल मिला। आज विश्वव्यापी स्तर पर वायु, जल एवं भूमि के प्रदूषण का प्रभाव समस्त जैवमण्डल पर पड़ा रहा है। मानवीय क्रियाओं का कोई भी पक्ष अछूता नहीं रहा हैं।

1– प्रस्तावना :–

सभी जीवित प्राणी अपने अस्तित्व हेतु प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं और अपने पर्यावरण में परिवर्तन करते हैं। जीवधारियों की यह योग्यता उनकी अनोखी और आवश्यक विशेषता है, लेकिन मनुष्य अपनी विविध क्रियाओं के द्वारा पर्यावरण को इतना बदल डालता है कि अब वह स्वयं और प्रकृति के लिए खतरा बन

गया है। मनुष्य अपने आदिम पूर्वजों से लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व अलग हो गया था। वर्तमान मानव के रूप में उसका उदय लगभग दो लाख वर्ष पूर्व माना जा सकता है जब वह शिकार और संग्रह अपना भरण–पोषण करता है। तब से अब तक वह विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरा है।

2– समस्या कथन :–

''पर्यावरण शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन''

3– उद्देश्य

इस शोध हेतु निम्न उद्देश्य बनाए गए है।–

(1) पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण की तुलना करना।

(2) पर्यावरण शिक्षा के प्रति शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की तुलना करना।

4– परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है जो निम्नवत् है–

(1) माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

5–. शोध–विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। उपरोक्त उल्लिखित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संकलित प्रदत्तों के आधार पर 't' परीक्षण की गणना की गयी।

6– न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श का चयन उपर्युक्त जनसंख्या को आधार मानकर किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मात्र दो ग्रामीण एवं दो शहरी विद्यालयों का चयन किया गया। इनमें प्रत्येक विद्यालयों से 25 छात्र/छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है। न्यादर्श का विवरण तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 1

सक्ती जिले से चयनित चार विद्यालय एवं उनसे चयनित विद्यार्थियों का विवरण

	शासकीय		अशासकीय	
	ग्रामीण	शहरी	ग्रामीण	शहरी
विद्यालय का नाम	शा0 पूर्व माध्यमिक विद्यालय असौंदा, सक्ती	शा0 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, स्टेशनपारा सक्ती	ज्ञानकुंज पब्लिक स्कुल असौंदा सक्ती	एम0एल0जैन पब्लिक स्कुल सक्ती
विद्यार्थियों की संख्या	25	25	25	25

7– शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित पर्यावरण शिक्षा प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

8– अध्ययन का परिसीमन

1. यह शोध सक्ती जिले के सक्ती ब्लाक के माध्यमिक स्तर के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित है।
2. यह शोध पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण तक ही सीमित है।

9– आंकड़ों का विश्लेषण

संकलित आँकडों का वर्गीकरण एवं सारणीकरन करने के पश्चात् उनका उपयुक्त विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के प्रकृति के आधार पर सांख्यिकी के रुप में टी–परीक्षण एवं कार्ल पियर्सन सहसंबंध का प्रयोग किया गया है। दो प्रदत्तों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं

HO_1 ''माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

प्रस्तुत शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्राप्तांकों का विश्लेषण t परीक्षण के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 01 में दर्शाया गया हैं, तदोपरान्त व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सारणी 01

छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के 't' परीक्षण के परिणामों का सारांश

क्र.सं.	न्यादर्श	N	M	SD	σd	t
1.	छात्र	25	35.48	9.6	1.82	–.219
2.	छात्राएँ	25	35.88	8.6		

= –.05 स्तर सार्थक नहीं है।

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका संख्या 01 द्वारा स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा t का मान .219 है जो .05 स्तर पर तालिका द्वारा प्राप्त t के मान से कम है। अतः संबन्धित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

HO_2 ''शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

प्रस्तुत शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्राप्तांकों का विश्लेषण 't' परीक्षण के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 4.4 में दर्शाया गया है, तदोपरान्त व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सारणी 02

छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के 't' परीक्षण के परिणामों का सारांश

क्र.सं.	न्यादर्श	N	N	SD	σd	t
1.	शासकीय विद्यालय के छात्र	25	36	8.2	2.55	0.16
2.	अशासकीय विद्यालय के छात्र	25	35.6	9.8		

= –.05 स्तर सार्थक नहीं है।

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका संख्या 02 द्वारा स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा 't' के मान से कम है। अतः संबंधित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की जा सकती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ''शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

10– निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर जो परिणाम प्राप्त हुए है उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि 'माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कोई अन्तर नहीं है तथा छात्र/छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति समान अभिवृत्त है।

प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा यह भी निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं नगरीय स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण अर्थात दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति समान रूप से जागरूक हैं। इसी प्रकार शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का भी पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्त में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात् दोनों वर्गो के विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति समान सोच रखते हैं।

11– शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक निहितार्थ किसी शैक्षिक अध्ययन की उपयोगिता से सम्बन्धित है जो शैक्षिक समस्या के समाधान को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा के प्रति सोच व विचार से सम्बन्धित है। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण जागरूकता में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। इसे शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में समाहित किया जाय शिक्षा द्वारा छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान को उनके ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष तक विकसित किया जाना चाहिए।

12– शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन को यथासम्भव त्रुटिरहित एवं प्रमाणिक बनाने का प्रयत्न किया गया है। फिर भी इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि अल्प समय में सीमित संसाधनों के सहारे विस्तृत अध्ययन नहीं किया जा सकता। इस अध्ययन में सक्ती के मात्र चार विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श के आकार में वृद्धि कर विस्तृत क्षेत्र को अध्ययन में सम्मिलित कर प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम को और अधिक प्रमाणिक बनाया जा सकता है। इस प्रकार अध्ययन के परिणामों एवं निष्कर्षो का सामान्यीकरण इसकी सीमाओं को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- सेंगर, (2002), ''पर्यावरण शिक्षा'', साहित्य पब्लिकेशन, आगरा।
- शर्मा, आर.ए. (2005), ''पर्यावरण शिक्षा'', आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
- अग्रवाल, उमेश चन्द्र (2004), ''पर्यावरण संरक्षण'', चाणक्य सिविल सर्विसेज टुडे।
- अवस्थी, एम.एन. (2006), ''पर्यावरणीय अध्ययन'', आगरा, लक्ष्मी नारायण देलही।
- भारती, अनीता (2006), ''एस्टडीआफरिलेशनशिपबिट्वीन एन्वायरमेंट एवेयर नेस एण्ड साइंटिफिक एटीट्यूड अमंग हायर सेकेण्डरी स्टूडेण्ट आफ वाराणसी सिटी'', शोध ग्रन्थ।
- ढ़ोलकिया, आर.पी. (2003), ''एन इकोलॉजिकल इनसाइप्स एण्ड एन्वायरमेंटल वैलयूज'': ''एन इण्डियन परस पैक्टिव, ''जनरल ऑफ वैल्यू एजूकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी.।
- गुप्ता एस.पी. (2003),''सांख्यिकी विधियाँ'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- जैन, एच.सी. (2000),''पर्यावरण संचार, शिक्षा एवं प्रबन्धन'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
- कपिल, एच.के. (2004),''अनुसंधान विधियाँ, व्यवहारपरक विज्ञानों में'', हर प्रकार भार्गव, 4/230 कचहरी घाट, आगरा।
- मुकूनन्दन, एन. (2004),''पर्यावरण, लोगों की सहभागिता और सतत् विकास'', कुरूक्षेत्र (ग्रामीण विकास मंत्रालय)।
- पाठक, अरूण कुमार (2005), ''पर्यावरण अध्ययन'', सिल्वर लाईन पब्लिकेशनन्स, फरीदाबाद।
- राणा, एस.वी.एस. (2005), ''पर्यावरणीय अध्ययन'', रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
- अग्रवाल, एस.के. (1988), ''एन्वायरमेंटल इश्यूज एण्ड रिसर्च इन इण्डिया'', हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर।
- अम्बस्ट, आर.एस. (1992), ''इकोलाजिकल एन्यावरमेंटल स्टडीज इन एजुकेशन'', बुच, एम.बी. (सम्पादित) ''फिथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिवर्य'', नई दिल्ली, एन.सीई.आर.टी.।
- वेस्ट जे.डब्लू. एवं कहान (1992), ''सीक्सस्थ एजूकेशन रिसर्च इन एजुकेशन'', प्रिटिंग हाए आफ इण्डिया, प्रा.लि., न्यू देलही।
- गोयल, डॉ. एम.के., ''पर्यावरण शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर।
- मूर, रूथ (1997), ''मैन इन एन्वायरमेंट'', टाटा मेग्राहिल, हिल पब्लिशिंग कम्पनी, न्यू देलही।
- मिश्रा, एन.एस. (1998), ''स्टडी ऑफ एन्वायरमेंट एवेयरनेस आफ सेकण्डरी स्कूल (यू.पी. एण्ड सी.बी.एस.ई. बोर्ड), स्टूडेंट्स'', लघु शोध प्रबन्ध।
- वर्मा, प्रीति तथा श्रीवास्तव, डी.एन. (1987), ''मनोविज्ञान ओर शिक्षा में सांख्यिकी'', लायल बुक डिपो, आगरा।